

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 13 अंक 9

www.csir.res.in

सितम्बर 2025

सीएसआईआर स्टार्टअप कॉन्क्लेव लखनऊ में सफलतापूर्वक सम्पन्न



डॉ. जितेंद्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 15 सितंबर 2025 को

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की ओर से आयोजित दो दिवसीय स्टार्टअप कॉन्क्लेव को संबोधित किया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई), लखनऊ में भारत के पहले स्वास्तिक आकार के

“कमल उद्यान” का उद्घाटन किया गया। तत्पश्चात उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सीएसआईआर स्टार्टअप कॉन्क्लेव 2025 को भी संबोधित किया। नव विकसित स्वास्तिक कमल उद्यान 930 वर्ग मीटर में फैला देश में अपनी तरह का पहला उद्यान है।

इसमें दुनिया भर से लाए गए कमल की 60 किस्में और वॉटर लिली की 50 श्रेणियां हैं, जिनका संरक्षण उन्नत आनुवंशिक विधियों, लाइट एक्सपोजर रेगुलेशन और वैज्ञानिक उपचारों के माध्यम से सुनिश्चित किया गया है। इसके मुख्य आकर्षणों में लखनऊ में विकसित दुनिया का पहला 108 पंखुड़ियों वाला कमल, एनबीआरआई-नमोह 108 है।

अपने सम्बोधन में डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि यह उद्यान जैव विविधता संरक्षण और उद्यमिता के केंद्र के तौर पर कार्य करेगा, साथ ही एक नए पर्यटन स्थल के रूप में भी उभरेगा। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि यह न केवल एक अनूठा संरक्षण प्रयास है, बल्कि यह फूलों की खेती, स्वास्थ्य और कृषि आधारित उद्योगों में नए अवसर पैदा करने का एक मंच भी है। उन्होंने आगे कहा कि यह सुविधा विज्ञान को आजीविका से जोड़ने के सरकार के दृष्टिकोण का प्रतीक है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि लखनऊ में स्टार्टअप कॉन्क्लेव आयोजित करने का फैसला विज्ञान और नवाचार कार्यक्रमों के विकेंद्रीकरण के सरकार के प्रयास का हिस्सा था। उन्होंने कहा हमने राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों को दिल्ली से बाहर जम्मू, हैदराबाद, मुंबई, भुवनेश्वर और अब लखनऊ जैसे शहरों तक पहुंचाने के लिए ध्यानपूर्वक काम किया है। इस संकल्प का ध्येय है कि विज्ञान उन महत्वाकांक्षी शहरों तक पहुंचे, जहां अपार संभावनाएं हैं।

उन्होंने लखनऊ स्थित सीएसआईआर संस्थानों की उपलब्धियों की ओर ध्यान केंद्रित करते हुए नमोह 108 कमल, कीट-प्रतिरोधी कपास के विकास और पुष्पकृषि मिशन के अंतर्गत पुष्पकृषि में किए गए नवोन्मेषी कार्यों का उल्लेख किया, जो किसानों और उद्यमियों को आजीविका के नए विकल्प प्रदान करता है। उन्होंने औषधि अनुसंधान में शहर के योगदान को भी याद



किया, जहां कैंसर और फैटी लीवर रोग सहित 13 नई दवाएं स्थानीय स्तर पर विकसित की गई हैं।

उन्होंने आगे कहा कि लखनऊ विश्व स्तर पर खपत करने वाले मेन्थॉल उत्पादों और लोकप्रिय पुदीने की गोलियों का जन्मस्थान है। उन्होंने उल्लेख किया कि जिस पुदीने की लोजेंज को दुनिया जानती है, उसका निर्माण यहीं हुआ था। आज हमारे वैज्ञानिक हर्बल माउथ फ्रेशनर जैसे नए मूल्य निर्माण करने वाले उत्पादों पर काम कर रहे हैं और मजबूत बाजार तैयार कर रहे हैं।

युवाओं की भूमिका पर, डॉ. जितेंद्र सिंह ने जोर देकर कहा कि उद्यमी बनने के लिए पीएचडी की डिग्री जरूरी नहीं है। उन्होंने बताया कि हमारे कई सफल स्टार्टअप ऐसे युवाओं ने स्थापित किए हैं जिनके पास भले ही बड़ी डिग्री न हो, लेकिन उनमें कौशल और अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रता थी। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर कॉन्क्लेव में स्वास्तिक लोटस गार्डन के उद्घाटन और विज्ञान, स्टार्टअप और नीति के सम्मिलन के साथ, लखनऊ ने भारत के वैज्ञानिक और उद्यमशीलता परिदृश्य में एक उभरते हुए केंद्र के रूप में अपने उदय का संकेत दिया है।



मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश में सीएसआईआर की पहल की सराहना की और राज्य सरकार की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि अपने विशाल संस्थानों और कुशल जनशक्ति के साथ, उत्तर प्रदेश, भारत की विज्ञान और स्टार्टअप यात्रा में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए पूरी तरह तैयार है।

सीएसआईआर स्टार्टअप कॉन्क्लेव में सीएसआईआर के उत्पादों की प्रदर्शनी और नवीन उत्पादों का अनावरण

लखनऊ में आयोजित सीएसआईआर स्टार्टअप कॉन्क्लेव में सीएसआईआर की तीन प्रमुख प्रयोगशालाओं एनबीआरआई, सीमैप और सीडीआरआई ने 13 हर्बल दवाएं पेश कीं। इनमें डायबिटीज की दवा बीजीआर-34 और कैंसर के लिए अर्जुन की छाल से बनी दवा प्रमुख आकर्षण रहीं। इन दवाओं में डायबिटीज, कैंसर और लीवर से जुड़ी बीमारियों के लिए नए और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित समाधान का दावा किया गया है। सीएसआईआर स्टार्टअप कॉन्क्लेव में सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करने वाली दवा थी बीजीआर-34 (BGR-34), जो दारुहरिद्रा, गिलोय, विजयसार, गुड़मार, मंजिष्ठा और मेथी जैसी पारंपरिक आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से बनाई गई है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह दवा न केवल ब्लड शुगर को नियंत्रित करती है, बल्कि नियमित और लम्बे समय तक सेवन करने पर डायबिटीज रिवर्सल यानी रोग को जड़ से ठीक करने में भी मदद कर सकती है। यह एक बड़ा वैज्ञानिक दावा है, जो आने वाले वर्षों में भारत को दुनिया में नई पहचान दिला सकता है।

सीएसआईआर-एनबीआरआई द्वारा मंदिरों से निकले बेकार फूलों को रिसाइकिल करके बनाए गए रसायन-मुक्त सिंदूर और कमल-आधारित पेय पदार्थों की एक श्रृंखला का भी इस स्टार्टअप कॉन्क्लेव में अनावरण किया गया। पारंपरिक सिंदूर, जिसमें अक्सर सीसा और अन्य हानिकारक धातुएँ होती हैं, के विपरीत, इस नए सिंदूर में प्राकृतिक रंग और सुरक्षित बाइंडिंग एजेंट का उपयोग किया गया है। शोधकर्ताओं ने इसे अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण, दोनों में एक महत्वपूर्ण कदम बताया है। सीएसआईआर-एनबीआरआई ने



कमल-आधारित पेय पदार्थों की एक श्रृंखला भी पेश की है। पहला, कमल की पंखुड़ियों से बना पेय, ताजा, एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर और हाइड्रेटिंग होने के साथ-साथ इसे विषहरण गुणों से युक्त बताया गया है। कमल के प्रकंद (जड़) और शहद से बना एक अन्य पेय, किण्वन द्वारा

प्राकृतिक रूप से 4 प्रतिशत तक अल्कोहलिक सामग्री विकसित करता है। पॉलीफेनोल्स और फ्लेवोनोइड्स से भरपूर, यह हृदय स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार कर सकता है। दोनों पेय जल्द ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में लॉन्च होने की उम्मीद है।

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने विज्ञान सचिवों के साथ समीक्षा बैठक की

डॉ. जितेंद्र सिंह ने 3 सितंबर 2025 को नई दिल्ली में नवनिर्मित कर्तव्य भवन में सभी विज्ञान सचिवों की एक उच्चस्तरीय आवधिक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। नॉर्थ ब्लॉक से मंत्रालय के स्थानांतरण के बाद नए परिसर में इस प्रकार की यह पहली संयुक्त बैठक थी।

समीक्षा बैठक में भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय कुमार सूद के साथ-साथ परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के विज्ञान सचिव और वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हुए।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने आगामी भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) की तैयारियों की समीक्षा करते हुए सभी विभागों को स्टार्टअप्स को सहयोग और प्रोत्साहन देने का निर्देश दिया ताकि राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सवों में उनका एकीकरण सुनिश्चित हो सके। देश के विभिन्न भागों में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए एक जन-केंद्रित मंच के रूप में उभरा है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने आगामी उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन (ईएसटीआईसी) पर भी विस्तृत जानकारी दी। यह भारत का प्रमुख वार्षिक मंच है जो मंत्रालयों, नवप्रवर्तकों, नोबेल पुरस्कार



विजेताओं, वैश्विक विशेषज्ञों और युवा नेताओं को एक साथ लाता है।

उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन अत्याधुनिक अनुसंधान, गहन तकनीकी सफलताओं और नए विचारों के साथ चर्चाओं को प्रदर्शित करेगा, जो “विकसित भारत 2047” की दिशा में वैज्ञानिक नेतृत्व के एक नए युग का सूत्रपात करेगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने समीक्षा के दौरान, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जैव-ई-3 (जैव-अर्थव्यवस्था, रोजगार, पर्यावरण) नीति पर दिए गए ध्यान का स्मरण किया और सभी विभागों से जैव प्रौद्योगिकी तथा संबंधित उभरते क्षेत्रों में प्रयासों को बढ़ाने का आह्वान किया, जिनमें भारतीय अर्थव्यवस्था में मूल्यवर्धन की अपार संभावनाएं हैं। केंद्रीय मंत्री ने कई क्षेत्रों में भारी बारिश की पृष्ठभूमि में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) और भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के कामकाज की समीक्षा की। उन्होंने बेहतर तैयारी और सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वास्तविक समय सूचना प्रसार और

प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को मजबूत करने के महत्व पर बल दिया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने पिछली मासिक बैठक में दिए गए निर्देशों पर डीएसटी, डीबीटी, सीएसआईआर, इसरो और एमओईएस द्वारा की गई कार्रवाई की व्यापक समीक्षा की। सरकार की ओर से विज्ञान संचार को बढ़ाने पर एक विशेष प्रस्तुति भी दी गई, जिसके बाद सभी सचिवों के साथ विचार-मंथन सत्र हुआ।

बैठक में परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव डॉ. अजीत कुमार मोहंती; जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव डॉ. राजेश गोखले; पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन; इसरो के अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन (वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए); डीएसटी के अतिरिक्त सचिव श्री सुनील कुमार और आईएमडी के महानिदेशक डॉ. मृत्युंजय महापात्रा के साथ-साथ डीएसटी, डीबीटी, सीएसआईआर, इसरो, एमओईएस और अन्य विज्ञान विभागों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में सीएसआईआर-सीजीसीआरआई के प्लेटिनम जयंती समापन समारोह को संबोधित किया

सीएसआईआर-केंद्रीय कांच एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान (सीजीसीआरआई), कोलकाता ने 28 अगस्त 2025 को अपने वर्ष भर चले प्लेटिनम जयंती समारोह का समापन किया। इस अवसर पर केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने भारत के भविष्य के तकनीकी विकास को गति देने के लिए वैज्ञानिक संस्थानों और उद्योग के बीच गहन सहयोग का आग्रह किया।

समापन समारोह को संबोधित करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत के अनुसंधान संस्थानों को सरकारी निर्भरता से आगे बढ़ना चाहिए और नवाचार को बनाए रखने तथा दीर्घकालिक प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए उद्योग के साथ सक्रिय रूप से साझेदारी करनी चाहिए। जम्मू-कश्मीर में लैवेंडर की खेती और वैक्सीन विकास जैसे उदाहरणों का हवाला देते हुए, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे शुरू से ही उद्योग संबंधों ने अनुसंधान को व्यवहार्य आजीविका के अवसरों और बाज़ार-तैयार समाधानों में बदलने में मदद की है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि संस्थागत अनुसंधान अलग-थलग रहकर प्रगति नहीं कर सकता। यदि हमें सेमीकंडक्टर, ग्रीन हाइड्रोजन और क्वांटम प्रौद्योगिकियों जैसे उभरते क्षेत्रों की मांगों के साथ तालमेल बिठाना है तो अन्य विज्ञान विभागों और उद्योग भागीदारों के साथ व्यापक एकीकरण आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि कांच और सिरामिक के क्षेत्र में सीजीसीआरआई के



कार्य के अनुप्रयोग स्वास्थ्य सेवा से लेकर रक्षा और नवीकरणीय ऊर्जा तक फैले हुए हैं।

डॉ. सिंह ने कहा कि 1950 में सीएसआईआर की सबसे प्रारंभिक प्रयोगशालाओं में से एक के रूप में अपनी स्थापना के बाद से, सीजीसीआरआई ने भारत की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है—पारंपरिक कांच और सिरामिक उद्योगों को समर्थन देने से लेकर उच्च तकनीक नवाचारों में अग्रणी भूमिका निभाने तक। इसके योगदानों में ऑप्टिकल ग्लास का स्वदेशी विकास, अपशिष्ट से ईंटों को इन्सुलेट करना, विकिरण-रोधी ग्लास और प्रत्यारोपण एवं स्वास्थ्य सेवा के लिए जैव-सिरामिक शामिल हैं। उन्होंने आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्वस्थ भारत, जल जीवन मिशन और मेक इन इंडिया सहित

प्रमुख राष्ट्रीय मिशनों के साथ सीजीसीआरआई के संरेखण पर प्रकाश डाला और यूरोप, अमेरिका और एशिया में संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के साथ-साथ हाल ही में ग्लास 2025 पर अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस की मेजबानी का उल्लेख किया।

इस अवसर पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने “भारत को आत्म-निर्भर बनाने के लिए पुनः समर्पण” शीर्षक से एक स्मारक पट्टिका का अनावरण किया और ऊर्जा, स्वास्थ्य सेवा और रेडोम प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में चुनिंदा सीजीसीआरआई सुविधाओं का दौरा किया। औपचारिक समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन और स्वागत भाषण के साथ हुई, जिसके बाद बीआईटी मेसरा के कुलपति प्रो. इंद्रनील मन्ना और आईआईटी खड़गपुर के निदेशक प्रो. सुमन चक्रवर्ती के विशेष

वक्तव्य हुए, जिसके दौरान सहयोगपरक अनुसंधान को मजबूत करने के लिए सीजीसीआरआई के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत आईआईटी कानपुर के प्रो. आशुतोष शर्मा ने भी सभा को संबोधित किया, इससे पहले सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक डॉ. शेखर सी. मांडे का एक वीडियो संदेश प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने अपने मुख्य भाषण देने से पहले पैन-सीएसआईआर सुरक्षा मैनुअल जारी किया।

भविष्य की ओर देखते हुए, मंत्री ने कहा कि सीजीसीआरआई अर्धचालकों के लिए उन्नत सिरामिक, हरित हाइड्रोजन मिशन के लिए ठोस ऑक्साइड इलेक्ट्रोलाइजर सेल, 3डी प्रिंटिंग और क्वांटम सामग्री जैसी तकनीकों के माध्यम से भारत के भविष्य के मिशनों में योगदान देने के लिए अच्छी स्थिति में है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संस्थान को युवा शोधकर्ताओं को



प्रशिक्षित करना, स्टार्टअप्स और कारीगरों का समर्थन करना जारी रखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भारत नवाचार में सबसे आगे रहे क्योंकि राष्ट्र विकसित भारत 2047 की ओर बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि सीजीसीआरआई की विरासत एक अनुस्मारक है कि विज्ञान और नवाचार किसी राष्ट्र के भाग्य को आकार दे

सकते हैं। अपने व्यापक अनुप्रयोगों के साथ संस्थान अमृत काल और उसके बाद भारत की यात्रा में योगदान देने के लिए विशिष्ट रूप से तैयार है। पिछले साल शुरू हुए प्लेटिनम जुबली समारोह ने कांच और सिरामिक विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्र के लिए सीजीसीआरआई के योगदान के 75 वर्षों को चिह्नित किया।

सीएसआईआर-एनबीआरआई के प्रयासों से ओडिशा में खिल रहा है विदेशी यूस्टोमा

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनबीआरआई) द्वारा विकसित पॉलीहाउस में ओडिशा में पहली बार विदेशी यूस्टोमा खिल रहा है। यूस्टोमा, एक ऐसा फूल जो अब तक ओडिशा में केवल आयात के माध्यम से ही उपलब्ध था। यह पहली बार स्थानीय स्तर पर खिल रहा है जिससे किसानों के लिए इस विदेशी पौधे की खेती और लाभ कमाने के अवसर खुल रहे हैं। लखनऊ स्थित अपने परिसर में यूस्टोमा की सफलतापूर्वक खेती करने के बाद, सीएसआईआर-एनबीआरआई



ने मेक्सिको और अमेरिका में मूल रूप से उगने वाले इस फूल की ओडिशा में खेती करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। यह फूल संबलपुर जिले के सनातनपाली में सीएसआईआर-एनबीआरआई द्वारा विकसित एक पॉलीहाउस में खिले। एनबीआरआई के निदेशक अजीत कुमार शासनी ने कहा कि कई महीनों से हमारे वैज्ञानिक इस बात का परीक्षण करने में लगे हुए थे कि क्या यह पौधा गर्म परिस्थितियों में जीवित रह सकता है। अगर यूस्टोमा संबलपुर में पनप सकता है तो किसान अपने खेतों में इसकी खेती कर

सकेंगे। इस विकास को ओडिशा में उच्च तकनीक वाली फूलों की खेती को एक बड़ा बढ़ावा बताते हुए डॉ. शासनी ने कहा कि यह पहल किसानों के लिए नए रास्ते खोलती है, आजीविका के अवसर पैदा करती है और स्थानीय बाजार में विदेशी फूलों को पेश करती है। एनबीआरआई के अनुसार यूस्टोमा की कटाई साल में दो बार की जा सकती है, जिससे एक सीज़न में प्रति एकड़ ₹2 लाख तक का मुनाफा हो सकता है। यूस्टोमा के साथ सीएसआईआर-एनबीआरआई गेंदा, चमेली, जरबेरा, रजनीगंधा, ग्लेडियोलस और

कमल के लिए रोपण सामग्री और तकनीकें प्रदान करता है, साथ ही किसानों को प्रशिक्षण और विपणन में भी सहायता करता है। उन्होंने आगे कहा कि किसानों को नमी या पानी की कमी के कारण होने वाले फफूंद जनित रोगों की पहचान और उपचार के लिए भी प्रशिक्षित किया जाएगा। एनबीआरआई अब कोरापुट जैसे दक्षिणी ओडिशा के जिलों में विदेशी फूलों की खेती का विस्तार करने की योजना बना रहा है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय के अवसर मिलेंगे।

सीएसआईआर-आईएमएमटी द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकारों पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन



सीएसआईआर-खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएमएमटी) और एमएसएमई-डीएफओ, कटक द्वारा संयुक्त रूप से 4 सितंबर 2025 को सीएसआईआर-आईएमएमटी सभागार, भुवनेश्वर में एमएसएमई इनोवेटिव योजना के

अंतर्गत बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आईपीआर के विभिन्न पहलुओं पर कई सत्र आयोजित किए गए। यह कार्यक्रम एमएसएमई-डीएफओ के सहयोग से

सीआरटीडीएच, इनटेक, बीआईटीई सी@सीएसआईआर-आईएमएमटी और सीएसआईआर-आईएमएमटी के मैत्री घटकों के माध्यम से आयोजित किया गया था और इसमें ओडिशा भर के एमएसएमई, स्टार्टअप, उद्यमी, छात्र, संकाय, शिक्षाविद, अनुसंधान

और अन्य पेशेवरों सहित लगभग 800 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जो आईपीआर के प्रति संवेदनशीलता पर एक बड़ी सफलता है। सीएसआईआर-आईएमएमटी के निदेशक डॉ. रामानुज नारायण ने इस एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन भाषण दिया और सीएसआईआर-आईएमएमटी तथा सीएसआईआर की विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया और कई व्यावहारिक उदाहरणों और केस स्टडी का हवाला देते हुए नवाचार और बौद्धिक संपदा अधिकारों के महत्व पर जोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने एमएसएमई, स्टार्टअप्स,

शिक्षा जगत, अन्य उद्योग और समाज के संभावित हितधारकों के बीच सहयोग और संयुक्त पहल पर भी जोर दिया।

सीएसआईआर-आईएमएमटी के प्रधान वैज्ञानिक और आईपी समन्वयक डॉ. टी. पवन कुमार ने एमएसएमई के पोषण के लिए सीआरटीडीएच, स्टार्टअप इनक्यूबेशन के लिए इनटेक, पूर्व और पश्चिम के बीच व्यापार और नवाचार संपर्क के लिए सीएसआईआर-आईसी-मुंबई में बीआईटीई सी@सीएसआईआर-आईएमएमटी और संभावित हितधारकों के बीच नवाचार के पोषण के लिए मैत्री के बैनर तले सीएसआईआर-

आईएमएमटी की गतिविधियों के विभिन्न घटकों पर प्रस्तुति दी।

उद्घाटन समारोह के दौरान, सीएसआईआर-आईएमएमटी ने चावल की भूसी से सिलिकॉन कार्बाइड बनाने की अपनी तकनीक कर्नाटक के एक एमएसएमई को हस्तांतरित की और 4M क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान एवं विकास के लिए जियोवेल के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इसके अलावा, एनआरडीसी ने सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की एक तकनीक ओडिशा के एक अन्य एमएसएमई को हस्तांतरित की।

सीएसआईआर-एसईआरसी ने किया सुरक्षात्मक बूथ/शैक तकनीक का हस्तांतरण

सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एसईआरसी) ने लघु उद्योग भारती (एलयूबी) के एक सदस्य, मेसर्स किस्टलर मोर्स ऑटोमेशन लिमिटेड, हैदराबाद को सुरक्षात्मक बूथ/शैक सफलतापूर्वक हस्तांतरित की है। यह तकनीक 21 अगस्त 2025 को सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई में मेसर्स किस्टलर मोर्स ऑटोमेशन लिमिटेड, हैदराबाद को हस्तांतरित की गई। सुरक्षा बूथ के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौते पर सीएसआईआर-एसईआरसी के निदेशक डॉ. एन. आनंदवल्ली और मेसर्स किस्टलर मोर्स ऑटोमेशन लिमिटेड, हैदराबाद के कार्यकारी उपाध्यक्ष कैप्टन के.के. शर्मा ने हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम में तकनीक के आविष्कारक डॉ. अमर प्रकाश, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. के. सतीश कुमार, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, बीकेएमडी, श्री वी. रमेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. जे. वेंकटेशन,



वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्रीमती चित्रा शंकरन, प्रमुख तकनीकी अधिकारी और श्रीमती आर. सोनिया, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी उपस्थित थे।

सीएसआईआर-एसईआरसी ने सैन्य और सुरक्षा कर्मियों के लिए एक मॉड्यूलर सुरक्षा बूथ/शैक विकसित किया है, जिसका निर्माण

स्टील के फ्रेम में लगे स्टील फाइबर-प्रबलित सीमेंटयुक्त मिश्रित पैनलों का उपयोग करके किया गया है। यह बूथ एनआईजे स्तर-III सुरक्षा प्रदान करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। जो एनआईजे मानकों के अनुसार 7.62 एपी प्रक्षेपास्त्रों के कई प्रहारों को झेलने में सक्षम है।

सीएसआईआर-आईएचबीटी ने स्थानीय किसानों के लिए बीज एवं पौध वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया

सीएसआईआर-हिमालयी जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी) की एक व्यावहारिक पहल के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश के पहाड़ों में रंगों और नए अवसरों की लहर दौड़ रही है। सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन के तहत संस्थान ने 1.66 लाख से अधिक कारनेशन की कलियाँ वितरित करके 130 से अधिक स्थानीय किसानों को एक बड़ा प्रोत्साहन दिया है। ये केवल पौधे नहीं अपितु बदलाव के बीज हैं, जो सोलन, मंडी, बिलासपुर, शिमला और हमीरपुर जिलों में 1.5 हेक्टेयर भूमि पर उगाए गए हैं। यह सहयोग केवल फूलों से कहीं बढ़कर है—यह स्थायी आजीविका के साधन विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस पहल से ग्रामीण समुदायों के लोगों के लिए अच्छी-खासी अतिरिक्त आय और नए रास्ते खुलेंगे। सीएसआईआर-आईएचबीटी यह भी सुनिश्चित कर रहा है कि किसानों के पास सफलता के लिए आवश्यक ज्ञान हो। विशेषज्ञ खेतों में जाकर व्यावहारिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। वे किसानों के साथ सीधे



काम करते हैं, समस्याओं का समाधान करते हैं और कीट नियंत्रण, पोषक तत्वों के उपयोग से लेकर आधुनिक खेती की तकनीकों तक, हर चीज पर व्यावहारिक सलाह देते हैं। इसका मतलब है कि किसानों को न केवल उच्च-गुणवत्ता वाले, रोग-मुक्त पौधों से, बल्कि उन्हें

सफलतापूर्वक उगाने के कौशल से भी सशक्त बनाया जा रहा है। वे इस पहल को पहाड़ों में फूलों की खेती के लिए एक शक्तिशाली नई पहल के रूप में देखते हैं, जो परिदृश्य को रोशन करेगी, उनकी आय को बढ़ाएगी और अगली पीढ़ी के लिए नए जीवंत अवसर पैदा करेगी।

सीएसआईआर-आईएमएमटी द्वारा प्राकृतिक कीटाणुनाशक सतह क्लीनर तकनीक का प्रदर्शन

सीएसआईआर-खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएमएमटी), भुवनेश्वर ने हाल ही में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर)- कॉमन रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट हब (सीआरटीडीएच)

के तत्वावधान में “रेनेसा: प्राकृतिक कीटाणुनाशक सतह क्लीनर की तकनीक” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण और प्रदर्शन का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य लाइवलीहुड अल्टरनेटिव्स प्राइवेट लिमिटेड से जुड़े महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम

से महिला सशक्तिकरण हेतु तकनीक का प्रसार करना था। लाइवलीहुड अल्टरनेटिव्स (एलए) ने जैव-आधारित प्राकृतिक सतह कीटाणुनाशक के निर्माण के लिए सीएसआईआर-आईएमएमटी के साथ एक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौते पर हस्ताक्षर



किए। जमीनी स्तर के समुदायों के बीच इस रेनेसा तकनीक को बढ़ावा देने के लिए कार्यान्वयन भागीदार पेस फाउंडेशन (लाइवलीहुड अल्टरनेटिव्स की एक गैर-लाभकारी शाखा) है, जो पहले से ही ओडिशा के विभिन्न जिलों में कई महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) से जुड़ा हुआ है। इस कार्यक्रम में सुंदरगढ़, कटक और संबलपुर जिलों की महिला स्वयं सहायता समूहों

(एसएचजी) की सदस्यों ने भाग लिया, जिन्होंने व्यावहारिक प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि ऐसी तकनीकें रसायनों के उपयोग को कम करते हुए और स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा देते हुए किफायती और टिकाऊ स्वच्छता समाधान प्रदान कर सकती हैं। रेनेसा एक पादप-आधारित, पर्यावरण-अनुकूल कीटाणुनाशक है जिसे फर्श सहित विभिन्न सतहों को

कीटाणुरहित करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। रासायनिक क्लीनर को एक किफायती विकल्प के रूप में विकसित किया गया है। यह आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग करता है और इसे छोटे पैमाने पर बिना किसी अपशिष्ट के, संधारणीय तरीके से तैयार किया जा सकता है जिससे यह घरों, संस्थानों और स्थानीय उद्यमों के लिए आदर्श है।

सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा सीएसआईआर फ्लोरीकल्चर मिशन के तहत मधुमक्खी पालन इकाइयों का वितरण

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान ने जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश में मधुमक्खी पालन क्षेत्र को मजबूत करने के लिए एक प्रमुख आउटरीच कार्यक्रम में 12 सितंबर 2025 को अपने फील्ड स्टेशन, बोनेरा, पुलवामा में सीएसआईआर फ्लोरीकल्चर मिशन के तहत पुलवामा, बारामूला, बडगाम, शोपियां और गांदरबल जिलों के 43 किसानों को 430 मधुमक्खी

पालन इकाइयां वितरित कीं। यह कार्यक्रम सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन के अंतर्गत 'क्षमता विकास के माध्यम से उद्यमिता विकास और किसान सशक्तिकरण' पर 10 दिवसीय कार्यक्रम के समापन के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम में पुलवामा के उपायुक्त (डीसी) डॉ. बशारत कयूम; सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक डॉ. ज़बीर

अहमद; सीएसआईआर आईआईआईएम शाखा प्रयोगशाला श्रीनगर के प्रमुख अब्दुर रहीम; सीएसआईआर आईआईआईएम फील्ड स्टेशन बोनेरा, पुलवामा के प्रधान वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक प्रभारी डॉ. शाहिद रसूल; सीएसआईआर आईआईआईएम के अधिकारी एवं शोधकर्ता तथा क्षेत्र के 80 किसान, कृषि उद्यमी और गणमान्य शामिल हुए।

कार्यक्रम में अपने संबोधन में डीसी ने ग्रामीण आजीविका उत्थान और मधुमक्खी पालन उन्मुख उत्पाद विकास एवं उनके विपणन को बढ़ावा देने हेतु पहल के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विविध रस-समृद्ध पुष्प जैव विविधता की प्रचुर उपलब्धता के कारण पुलवामा और कश्मीर के अन्य हिस्सों में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर-आईआईआईएम के स्थानीय किसानों और कृषि-उद्यमियों के साथ अपने विविध कृषि-आधारित मिशन कार्यक्रमों के माध्यम से सहयोगात्मक प्रयासों ने कृषि-उन्मुख आय सृजन के अवसरों को सुदृढ़ किया है और क्षेत्र में ग्रामीण जैव-उद्यमिता को बढ़ावा दिया है साथ ही जिले में संधारणीय आर्थिक विकास में भी योगदान दिया है।

डॉ. बशारत ने भारत के पहले मोनोफ्लोरल लैवेंडर शहद के विकास के लिए सीएसआईआर आईआईआईएम के वैज्ञानिकों को बधाई दी, जिससे यह जिला विशिष्ट शहद के उत्पादन के लिए वैश्विक केंद्र में आ गया और बताया कि इस नवीन शहद को भौगोलिक संकेत टैगिंग के लिए पंजीकृत किया जाएगा।

सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक ने अपने संबोधन में किसान-केंद्रित नवाचारों, विकास और प्रौद्योगिकियों के जमीनी स्तर पर अनुप्रयोग के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन के माध्यम से वे वाणिज्यिक पुष्पकृषि फसलों और उनके मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन और उपयोग द्वारा किसानों के आय स्रोतों में विविधता लाकर उन्हें सशक्त बनाने के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारे वैज्ञानिक कृषि उद्यमों और मधुमक्खी पालन के विविधीकरण पर सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं ताकि खाद्य मूल्य श्रृंखला में इसकी अनूठी जगह बन सके जो हमारी प्राथमिकता रही है।



मधुमक्खी पालन प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ उत्पन्न करता है और फसलों में परागण क्षमता में भी सुधार करता है, जिससे समग्र उत्पादकता और नाजुक कृषि-पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता में वृद्धि होती है।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए, बीएलएस प्रमुख ने गुणवत्तापूर्ण शहद और अन्य मधुमक्खी पालन उत्पादों की बाजार संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी पालन में वैज्ञानिक प्रोटोकॉल अपनाने से किसान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार मानकों को पूरा करने वाली उच्च गुणवत्ता वाली उपज सुनिश्चित करते हुए अपनी आय को अधिकतम कर सकेंगे। उन्होंने आगे कहा कि यह पहल सीएसआईआर आईआईआईएम के जम्मू और कश्मीर में संधारणीय खेती और ग्रामीण सशक्तिकरण के लिए एक समग्र मॉडल बनाने के व्यापक लक्ष्य को दर्शाती है।

इससे पहले, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, फील्ड स्टेशन पुलवामा ने सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन का विस्तृत

तकनीकी अवलोकन प्रस्तुत किया, जो क्षेत्र-विशिष्ट वाणिज्यिक पुष्पकृषि फसलों के अंतर्गत क्षेत्र विस्तार और उनके प्रभावी विपणन के माध्यम से पुष्पकृषि क्षेत्र को मजबूत करने के लिए एक अखिल भारतीय पहल है।

कार्यक्रम में आधुनिक मधुमक्खी पालन पद्धतियों, मधुमक्खी पालन केंद्रों में रोग प्रबंधन और फसल उत्पादकता एवं किसानों की आय बढ़ाने के लिए पुष्प-कृषि के साथ मधुमक्खी पालन के एकीकरण पर तकनीकी प्रदर्शन शामिल थे। इस पहल के तहत 43 प्रशिक्षित लाभार्थियों को 430 मधुमक्खी बक्से, वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन पर तकनीकी मैनुअल और प्रमाण पत्र वितरित किए गए ताकि उन्हें मधुमक्खी पालन को आय और आजीविका सृजन के स्रोत के रूप में अपनाने में सहायता मिल सके।

कार्यक्रम का समापन विशेषज्ञों और किसानों के बीच एक संवाद सत्र के साथ हुआ।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में हिमालयी जैवसंसाधनों के संधारणीय विकास और संरक्षण हेतु बहु-विषयक दृष्टिकोण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन



सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में आयोजित दो दिवसीय, हिमालयी जैवसंसाधनों के संधारणीय विकास और संरक्षण हेतु बहु-विषयक दृष्टिकोण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 3 सितंबर 2025 सम्पन्न हुई। यह छात्र-प्रेरित पहल डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित की गई थी, जिसमें देशभर से 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर अपने उद्घाटन संबोधन में सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संस्थान की नवीनतम गतिविधियों के बारे में जानकारी दी और जैव संसाधनों के संरक्षण और जैव आर्थिकी में उसके योगदान पर प्रकाश डाला।

तत्पश्चात डॉ. राकेश सहगल, एनआईटी, हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश) ने इस आयोजन तथा संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा की वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं परस्पर सहयोग आज की आवश्यकता हैं जिन पर हमें और अधिक ध्यान देना होगा। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से आए डॉ. पी.के. जोशी ने जैव संसाधनों की मैपिंग और विश्लेषण के लिए सेंसर-आधारित इमेजिंग तकनीकों पर विचार प्रस्तुत किए। तदोपरान्त विशेषज्ञों और छात्रों द्वारा चार सत्रों में प्रस्तुतियाँ दी गईं। पहले सत्र में आईआईएफएम भोपाल के डॉ. सी.पी. काला ने अल्पाइन चारागाहों और उनके पारिस्थितिकी तंत्र की भूमिका पर मुख्य व्याख्यान दिया।

दूसरे सत्र में एच.ए.पी.पी.आर.सी, उत्तराखंड के डॉ. वी.के. पुरोहित ने उच्च हिमालयी औषधीय पौधों और उनके महत्व पर प्रकाश डाला। महाराष्ट्र की राइज एंड शाइन बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड के श्री ललित अवहद ने जीव विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों पर चर्चा की।

तीसरे सत्र में नई दिल्ली जे.एन.यू से आए डॉ. पी.के. वर्मा ने पादप कोशिका और आणविक विज्ञान पर विशेषज्ञ वक्तव्य प्रस्तुत किया। वहीं डॉ. मोहर सिंह, एन.बी.पी. जी.आर, शिमला ने भविष्य के विकास के लिए आनुवंशिक संसाधनों के महत्व को रेखांकित किया।

चौथे सत्र में डॉ. पी.एस. पनेसर, एस.एल.आई.ई.टी, पंजाब ने खाद्य क्षेत्र और इस दिशा में हो रहे अनुसंधानों पर विचार

साझा किए। डॉ. एस. जाचक, एन.आई. पी.ई.आर, पंजाब ने ऑनलाइन माध्यम से सभा को संबोधित किया और फाइटोफार्मास्युटिकल्स तथा प्राकृतिक उत्पादों पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त, छात्रों द्वारा कुल 15 मौखिक एवं 57 पोस्टर

प्रस्तुतियाँ दी गईं। इस अवसर पर संस्थान द्वारा हस्तांतरित तकनीकों पर आधारित उत्पादों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई तथा मूल्यवर्धित खाद्य उत्पादों के क्षेत्र में दो प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। एक ताश्निका इंडिया,

नई दिल्ली के साथ और दूसरा महालक्ष्मी माल्ट प्रोडक्ट्स, हरियाणा के साथ। संगोष्ठी के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी, प्रस्तुतियाँ, पोस्टर और मीम्स के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया।

सीएसआईआर-एनआईआईएसटी द्वारा कृषि-उद्यमों के सशक्तिकरण पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनआईआईएसटी) ने 'सामाजिक जुड़ाव: कृषि-उद्यमों का सशक्तिकरण- विज्ञान, स्थिरता और समाज का सेतु' विषय पर हाल ही में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में एम.एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन (एमएसएसआरएफ) की अध्यक्ष और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की पूर्व मुख्य वैज्ञानिक सौम्या स्वामीनाथन की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भारत को खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विविध पोषण स्रोतों की पहचान करने हेतु अनाज-केंद्रित दृष्टिकोण से आगे देखने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमें अनाज से परे पोषण के स्रोतों पर भी ध्यान देना होगा। यदि आप भारतीयों के पोषण संबंधी प्रोफाइल को देखें, तो हम वास्तव में बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, 40% भारतीय स्वस्थ और पौष्टिक आहार का खर्च नहीं उठा सकते। राष्ट्रीय पोषण संस्थान (एनआईएन) के आंकड़े भी बताते हैं कि लोग अपने द्वारा परिभाषित पौष्टिक आहार नहीं ले रहे हैं। डॉ. स्वामीनाथन ने कृषि और संबद्ध



उत्पादों में मूल्य संवर्धन की क्षमता निर्माण की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि भारत मूल्य संवर्धन के क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे पास बहुत सारा कच्चा माल है। हम उस कच्चे माल को थाईलैंड, वियतनाम या अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे देशों को भेजते हैं जो मूल्य संवर्धन करते हैं। फिर मूल्य में 10% या 20% की वृद्धि होती है और फिर उस देश को लाभ होता है। इस अवसर पर सीएसआईआर-एनआईआईएसटी के निदेशक, डॉ. सी. आनंदरामकृष्णन, जिन्होंने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की, ने कहा कि भारत को मूल्य संवर्धन, नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से अपने कृषि और खाद्य उत्पाद निर्यात को बढ़ाने

पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। डॉ. आनंदरामकृष्णन ने कहा कि कृषि उद्यमों को मजबूत करके भारत घरेलू पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है। इस कार्यक्रम में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-खड़गपुर के एमेरिटस प्रोफेसर एच.एन. मिश्रा मुख्य अतिथि थे। राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान (निफ्टम तंजावुर) के विशेषज्ञ इस कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि थे। निफ्टम तंजावुर, मसाला अनुसंधान संस्थान, नारियल विकास बोर्ड, नाबार्ड, आईआईटी खड़गपुर और एनआईआईएसटी के विशेषज्ञों ने कृषि नवाचार, मूल्यवर्धन प्रौद्योगिकियों और उद्यम विकास पर तकनीकी सत्रों में भाग लिया।

सीएसआईआर-निस्पर में 80वें संयुक्त राष्ट्र महासभा (एसएसयूएनजीए80) में विज्ञान शिखर सम्मेलन 2025 का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने 80वें संयुक्त राष्ट्र महासभा (एसएसयूएनजीए80) में विज्ञान शिखर सम्मेलन 2025 में भाग लिया। इसके अंतर्गत “विज्ञान में महिलाएं और लड़कियां: लैंगिक-समावेशी नवाचार को प्रोत्साहन देना, लैंगिक समानता और बाधाओं को तोड़ना” विषय पर चर्चा का आयोजन किया गया।

शिखर सम्मेलन में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) जैसे एसडीजी 5 (लैंगिक समानता), एसडीजी 8 (समृद्धि और आर्थिक विकास), और एसडीजी 10 (असमानता में कमी) पर चर्चा की गई। सम्मेलन सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक डॉ. गीता वाणी रायसम के स्वागत भाषण से शुरू हुआ। उन्होंने अपने संबोधन में विज्ञान में लैंगिक समानता के महत्व पर बारीकी से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विज्ञान में महिलाओं के लिए एक अनुकूल कार्य व्यवस्था आवश्यक है। हमें महिलाओं की असमानता को दूर करने और विशिष्ट नीतियों के साथ बाधाओं को तोड़ने के लिए समाधान प्रदान करने की आवश्यकता है।

सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नरेश कुमार ने सत्र की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि महिलाएं विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। उन्होंने बताया कि वैश्विक स्तर पर 35 प्रतिशत एसटीईएम पेशेवर महिलाएं हैं।

सीएसआईआर की उत्कृष्ट वैज्ञानिक डॉ. रंजना अग्रवाल ने लैंगिक-समावेशी



नवाचार पर सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि पिछले तीन विज्ञान शिखर सम्मेलनों में सीएसआईआर ने लैंगिक समावेशन को केंद्र में रखते हुए विविधता के लिए ठोस प्रयास किए हैं। यह महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली असमानता का एक वैश्विक मुद्दा है।

पूर्व प्रोफेसर और भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग में वरिष्ठ सलाहकार डॉ. संजय मिश्रा ने अनुसंधान और नवाचार में समान अवसरों को बढ़ावा देने के लिए लैंगिक-संवेदनशील नीतियों और लैंगिक समानता योजनाओं का समर्थन किया। डॉ. मिश्रा ने इस बात पर बल दिया कि लैंगिक-संवेदनशील नीतियों को अभिकल्पित और कार्यान्वित करने से सभी के लिए समान अवसर तैयार हो सकते हैं। हमें वैश्विक संधारणीय विकास में महिलाओं के योगदान को महत्व देना चाहिए। उन्होंने भारत की पहलों पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत सरकार ने विज्ञान में महिलाओं को

बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान संस्थानों के लिए जीएटीआई और स्कूलों के लिए विज्ञान ज्योति जैसे कार्यक्रम शुरू किए हैं।

भारत के अमृता विश्व विद्यापीठ में यूनेस्को की लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण अध्यक्ष डॉ. भवानी राव ने चर्चा की कि कैसे महिला वैज्ञानिक प्रेरणा से आकांक्षा की ओर बढ़ते हुए भविष्य को आकार दे रही हैं। उन्होंने बताया कि नैतिक एआई नीतियों और लक्षित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से एआई तकनीक लैंगिक पूर्वाग्रहों से मुक्त होनी चाहिए।

सीएसआईआर-निस्पर की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक श्रीमती संध्या वाकडिकर ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी (एसटीईएम) में लैंगिक समानता को मुख्यधारा में लाने पर एक अध्ययन के निष्कर्ष साझा किया। उन्होंने कहा कि संगठनों और व्यक्तियों पर किए गए हमारे सर्वेक्षण से पता चला है कि सीएसआईआर के कुल कर्मियों में महिलाओं

की संख्या 16.1 प्रतिशत है। संस्थानों में तनाव प्रबंधन कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

शिखर सम्मेलन के दूसरे सत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व वरिष्ठ सलाहकार डॉ. अखिलेश गुप्ता की अध्यक्षता में “बदलती दुनिया के लिए एसटीईएम” पर एक पैनल चर्चा हुई। उन्होंने धन और संसाधनों तक पहुँच में असमानता पर ध्यान दिया और

इस बात पर बल दिया कि पुरुषों के पास अधिक अवसर हैं लेकिन महिलाओं के पास कम अवसर हैं। व्यवस्था में समानता लाना भी पुरुषों का काम है।

पैनल में शामिल लेफ्टिनेंट कमांडर (सेवानिवृत्त) सुश्री वर्तिका जोशी, क्लाइमवर्क्स मैमथ, आइसलैंड; डॉ. नादिया अशुलोवा, निदेशक, एस.आई. वाविलोव

इंस्टीट्यूट फॉर द हिस्ट्री ऑफ एस एंड टी, रूसी विज्ञान अकादमी, रूसी संघ; डॉ. श्रीदेवी अन्नपूर्णा सिंह, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीएफटीआरआई, भारत; डॉ. दिशा आहूजा, प्रबंध निदेशक, आहूजा इंजीनियरिंग सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, भारत; ने एसटीईएम क्षेत्रों में विविधता को अपनाने के लिए लैंगिक-समावेश पर विचार-विमर्श किया।

सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू चौथे भारत उद्यमिता शिखर सम्मेलन में ‘भारत इनक्यूबेटर पुरस्कार 2025’ से सम्मानित

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम), जम्मू के प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर (टीबीआई) को नई दिल्ली के एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में आयोजित चौथे भारत उद्यमिता शिखर सम्मेलन में ‘भारत इनक्यूबेटर पुरस्कार 2025’ से सम्मानित किया गया।

भारत उद्यमिता शिखर सम्मेलन, भारतीय उद्यमी संघ (ईएआई) द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला एक प्रमुख कार्यक्रम है। यह राष्ट्रीय स्तर का सम्मान, जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने, स्टार्टअप्स को समर्थन देने और उद्यमिता को बढ़ावा देने में आईआईआईएम इनक्यूबेटर के उत्कृष्ट योगदान को दर्शाता है।

सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक और आईआईआईएम-टीबीआई के अध्यक्ष डॉ. ज़बीर अहमद ने कहा कि सीएसआईआर-आईआईआईएम कृषि-तकनीक, पोषण, स्वास्थ्य सेवा, फाइटोफार्मा, सुगंध और जैव प्रौद्योगिकी जैसे प्रमुख क्षेत्रों में स्टार्टअप्स को समर्थन देने के लिए लगातार काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह पुरस्कार जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास को गति देने



की हमारी अटूट प्रतिबद्धता की एक मजबूत पुष्टि है।

डॉ. अहमद ने इस उपलब्धि का श्रेय केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री और सीएसआईआर के उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह के दूरदर्शी नेतृत्व को दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि जम्मू-कश्मीर में स्टार्टअप की सफलता की कुंजी मानसिकता में बदलाव और स्थानीय संसाधनों का उपयोग है। इससे पहले समारोह के दौरान, सीएसआईआर-आईआईआईएम के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और आईआईआईएम-टीबीआई के प्रधान अन्वेषक डॉ. सौरभ सरन ने बताया कि सीएसआईआर-आईआईआईएम वर्तमान में तीन इनक्यूबेशन केंद्र संचालित करता है (i) सीएसआईआर-

आईआईआईएम, जम्मू में बायोनेस्ट इनक्यूबेटर (ii) औद्योगिक बायोटेक पार्क, कठुआ में बायोनेस्ट इनक्यूबेटर और (iii) आईआईआईएम शाखा, श्रीनगर में अटल इनक्यूबेशन केंद्र। उन्होंने बताया कि इन केंद्रों ने 125 से अधिक स्टार्टअप्स को समर्थन दिया है, जिनमें से 20 से अधिक ने सफलतापूर्वक बाजार में उत्पाद लॉन्च किए हैं। डॉ. सरन ने अरोमा मिशन, फाइटोफार्मास्युटिकल्स और आजीविका से जुड़े नवाचारों जैसे विषयगत क्षेत्रों पर टीबीआई फोकस के दृष्टिकोण को भी साझा किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सरदार मनजिंदर सिंह सिरसा, उद्योग, खाद्य आपूर्ति, पर्यावरण, वन और वन्यजीव मंत्री, एनसीटी दिल्ली सरकार उपस्थित थे।

सीएसआईआर-एनआईओ में समुद्री अनुसंधान पर राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (सीएसआईआर-एनआईओ), गोवा ने डोना पाउला स्थित अपने परिसर में 18-19 सितम्बर 2025 को 'भारत के विकास और भविष्य की संभावनाओं में समुद्री अनुसंधान का योगदान' विषय पर हिंदी में दो दिवसीय राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया। मुख्य अतिथि, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, गोवा परिसर की डीन, प्रो. डॉ. सुजाता कदम ने जीवनशैली में आयुर्वेद के महत्व पर प्रकाश डाला और अपने संस्थान द्वारा की जा रही गतिविधियों की जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि, सीएसआईआर-आईएमएमटी, भुवनेश्वर के निदेशक, डॉ. रामानुज नारायण ने ऐसे वैज्ञानिक संगोष्ठियों के आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला और राष्ट्रीय विकास में सीएसआईआर संस्थानों, विशेष रूप से सीएसआईआर-एनआईओ के योगदान की सराहना की। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. अरुण देव सिंह ने समुद्री अन्वेषण में सूक्ष्म जीवाश्मों की उपयोगिता पर व्याख्यान दिया। सीएसआईआर-एनआईओ के निदेशक प्रो. सुनील कुमार सिंह ने समुद्र विज्ञान में उपलब्ध व्यापक अवसरों के बारे में बताया और बताया कि कैसे शोध के परिणाम



सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकते हैं। भारत सरकार के नीति आयोग की हिंदी भाषा सलाहकार समिति की सदस्य और हिंदी विभागाध्यक्ष एवं राजकीय महाविद्यालय, खंडोला, गोवा की पूर्व उप-प्राचार्य (शैक्षणिक) डॉ. आशा बी. गहलोत समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं। अपने संबोधन में, उन्होंने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में ऐसे सम्मेलनों के आयोजन के महत्व पर बल दिया और कहा

कि इससे वैज्ञानिक अनुसंधान को समाज तक पहुँचाने और समुद्री अर्थव्यवस्था में सार्थक योगदान देने में मदद मिलेगी। इस संगोष्ठी में रासायनिक समुद्र विज्ञान, जैविक समुद्र विज्ञान, भूवैज्ञानिक समुद्र विज्ञान और भौतिक समुद्र विज्ञान एवं महासागर इंजीनियरिंग पर आधारित चार वैज्ञानिक सत्र आयोजित किए गए। देश भर के 12 संस्थानों के 150 से अधिक प्रतिनिधियों की भागीदारी के साथ कुल 34 मौखिक प्रस्तुतियाँ और 20 पोस्टर प्रस्तुतियाँ दी गईं।